

1. पुल बनी थी माँ

1. 'पुल बनी थी माँ' से क्या तात्पर्य है ?

नदी के ऊपर का पुल दोनों किनारों को जोड़ने की तरह माँ बच्चों को आपस में जोड़नेवाला पुल बनी थीं। बच्चों के बीच प्यार, सहानुभूति और भाईचारा बढ़ाकर और सभी खतरों से बचाकर माँ उन्हें पालती थीं।

2. 'बुढ़ा रही है माँ' इसका आशय क्या है ?

माँ के शरीर पर बुढ़ापे का असर दिखने लगा। वह शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर होने लगी। बच्चों को संभालने की शक्ति अब उनमें नहीं है।

3. 'माँ आखिर माँ ही तो है' इससे आपने क्या समझा ?

बच्चों की भलाई के लिए ही माँ अपना जीवन समर्पित कर देती हैं। लेकिन बुढ़ापे में बच्चे माँ के साथ बुरे व्यवहार करने पर भी उनके मन में बच्चों के प्रति प्यार ही रहेगी। हर माँ अपने बच्चों के दिक्कतें मिटाके हमेशा उन्हें खुश देखना चाहने से ऐसा कहता है।

4. आशयवाली पंक्ति/ पंक्तियाँ लिखें।

- | | |
|---|---------------------------------------|
| 1. बेटों का जीवन बेरोकटोक चलती गाड़ी के समान रहा। | (दौड़ती रहती थी.....छुक छुक छक छक) |
| 2. माँ की देखभाल की ज़िम्मेदारी बेटों पर आ गई। | (हाथों हाथ रहतीकंधों में आ गई।) |
| 3. बेटे अपने दायित्व बदलते रहे। | (जब तक जीवितअपने कंधे।) |
| 4. माँ के चले जाने से बेटे बेसहारे बने। | (और माँ के कंधों सेहमारे कंधे।) |
| 5. हम बेसहारे बने। | (उतर गए हमारे कंधे) |
| 6. माँ मर गई। | (हमारे कंधों से उतर गई माँ) |
| 7. बेटों के कष्ट देखकर माँ उन्हें छोड़कर चली गई। | (बार बार हमें कंधेउतर गई माँ) |
| 8. हम अपने उत्तरदायित्व बदलते रहे। | (हम बदलते रहे अपने कंधे) |
| 9. किसी नियंत्रण के बिना चलती रहती थी। | (दौड़ती रहती थी बेधड़क) |

5. समानार्थी शब्द लिखें।

- | | | |
|---|---------------------------------|--------------------------------------|
| 1. बिना बाधा के / बिना किसी रुकावट के / बेरोकटोक - बेधड़क | 2. सशक्त कंधा - वृषभ कंधा | 3. सेतु - पुल |
| 4. रहे समय - आए दिन | 5. स्वभाव - आदत | 6. अंत में - आखिर |
| 7. शब्द - आवाज़ | 8. ट्रैफिक लाइट - हरी लाल बत्ती | 9. रेलगाड़ी की आवाज़ - छुक छुक छक छक |

6. इसका मतलब क्या है ?

- | | |
|---|---|
| 1. कंधों में आना - आश्रय में आना / दायित्व ऊपर आना / किसी संरक्षण में आना | 2. कंधा बदलना - दायित्व बदलना |
| 3. कंधा उतरना - बेसहारे (निराश्रय) होना / दुर्बल होना | 4. भारी होना - बोझ बनना |
| 5. महसूस करना - अनुभव करना | 6. कंधों से उतर जाना - मर जाना / अंतिम प्रयाण करना / सदा के लिए छोड़कर जाना |
| 7. हाथों हाथ रहना - संभालना | 8. बुढ़ा रही है - उम्र ढल रही है / बुढ़िया हो रही है |
| 9. टूटती रही - दुर्बल होती रही / कमजोर होती रही / बुजुर्ग होती रही | 10. पुल बनी थी - परिवार के सदस्यों को जोड़नेवाली थी |
| 11. पिता के बाद - पिता की मृत्यु के बाद | 12. बार-बार कहना - एक ही बात को कई बार दोहराना |

7. कविता का आशय

हिंदी के मशहूर कवि श्री. नरेंद्र पुंडरीक की बूढ़े माँ-बाप के प्रति अपने उत्तरदायित्वों से विमुख होती जा रही युवा पीढ़ी के व्यवहार को दर्शानेवाली एक सुंदर कविता है पुल बनी थी माँ।

कवि कहते हैं कि माँ भाईयों के बीच पुल बनी थी। पुल दो किनारों को आपस में जोड़ने की तरह माँ परिवार के हर सदस्य को आपस में जोड़नेवाली कड़ी रही। इस माँ रूपी पुल से बच्चों की ज़िंदगी रूपी रेलगाड़ी बेरोकटोक चलती रही। पिता के चल बसने के बाद भी भाइयों के बीच माँ पुल बनी थी। माँ धीरे-धीरे टूटने लगी। यानी मानसिक और शारीरिक रूप से वह धीरे-धीरे कमजोर होती गई। उसके शरीर पर बुढ़ापे का असर दिखने लगा। एक ही बात को माँ बार-बार कहने लगी। बच्चे इस आदत को उसके बढ़ते हुए बुढ़ापे की निशानी मानकर जीने लगे। उसकी आवाज़ कमजोर होती रही। वह धीरे-धीरे दुर्बल होती रही। बच्चों के प्रति प्यार और दुलार से रहनेवाली माँ एक दिन बच्चों के आश्रय में आ गई। धीरे-धीरे बच्चों के सशक्त कंधों में बोझ बन गई। जब तक बूढ़ी माँ जीवित रही, बेटे माँ की देखभाल की ज़िम्मेदारी एक दूसरे के कंधों पर डालते रहे। सारी ज़िंदगी बेटों के लिए जीनेवाली माँ बुढ़ापे में बेटों के लिए भार बन गई। पर माँ के मातृत्व ने बेटों की इस कठिनाई को सह नहीं पाया। वह स्वयं उनके कंधों से उतर गई। यानी उसकी मृत्यु हुई। माँ के अभाव में बेटे निराश्रय और दुर्बल हो गए।

निस्वार्थ भाव से बेटों को पालती रही माँ बूढ़ी होने पर बोझ समझकर उन्हें वृद्ध सदनों में छोड़ने की युवा पीढ़ी का बुरा व्यवहार आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करनेवाली यह कविता हर तरह से बहुत प्रासंगिक और अच्छी है। कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है।

8. मैया की चिट्ठी कहाँ से आई ?

ANS - वृद्धाश्रम से

9. मैया की चिट्ठी वृद्धाश्रम से क्यों आई ?

ANS - माँ को उनके बेटों ने वृद्धाश्रम में छोड़ दिया होगा। इसलिए मैया की चिट्ठी वृद्धाश्रम से आई।

10. माँ को वृद्धाश्रम में क्यों रहना पड़ता है ?

ANS - बेटे अपने बूढ़े माँ-बाप की देखभाल का दायित्व लेना नहीं चाहते हैं। इसलिए उन्हें वृद्धाश्रम में रहना पड़ता है।

11. वृद्धाश्रम में रहनेवाली माँ किसके बारे में सोचती है ?

ANS - अपने बेटे के बारे में

12. एक दिन हमारे कंधों में कौन आ गई ?

ANS - माँ

13. पुल किसकेलिए होता है ?

ANS - पुल दो किनारों को जोड़ने के लिए होता है।

14. स्टेशन में हरी लाल बत्ती किसकेलिए होता है ?

ANS - गाड़ियों के निकलने या रुकने का संकेत हरी लाल बत्तियों से दिया जाता है।

15. वृषभ कंधा किसका है ? ऐसा क्यों कहा गया है ?

ANS - बेटों का, बूढ़े लोगों की तुलना में उनके बेटों के कंधे ज्यादा मज़बूत होते हैं।

16. माँ बेटों के लिए पुल के समान थी। क्यों ?

ANS - क्योंकि बेटों के जीवन रूपी गाड़ी माँ रूपी पुल से बिना किसी रुकावट के चलती रहती थी।

17. कौन कंधे बदलते रहे ?

ANS - बेटे

18. कविता में 'हम' किसका सूचक है ?

ANS - बेटों का

19. कविता में रेलगाड़ी का संबंध किससे है ?

ANS - बेटों के जीवन का

20. माँ किसके वृषभ कंधों पर भारी होती है ?

ANS - बेटों के

21. अब तक बेटे किसके आश्रय में थे ?

ANS - माँ के

22. 'वृषभ कंधा' - में विशेषण शब्द कौन-सा है ?

ANS - वृषभ

23. 'उतर गए हमारे कंधे' - से आप क्या समझते हैं ?

बेटे अपनी बूढ़ी माँ की देखभाल के दायित्व से बचन का प्रयास करते रहते हैं। लेकिन माँ मर जाने पर वे बेसहारे बन जाते हैं।

24. 'हम बदलते रहे अपने कंधे' - इसका मतलब क्या है ?

जब तक माँ जीवित रही, बेटे माँ को एक दूसरे के कंधे पर डालते रहे यानी कंधे बदलते रहे। उनको माँ का संरक्षण बहुत कठिन लगने लगा।

25. टिप्पणी - वर्तमान समय में इन पंक्तियों का क्या महत्व है?

वर्तमान समाज में वृद्धजनों की समस्या एक भयंकर समस्या बन रही है। वृद्धजनों को पालनेवाले बहुत से केंद्र खुले जा रहे हैं। क्योंकि बेटे-बेटियों को अपने बूढ़े माँ-बाप को देखने का समय नहीं हो रहा है, मन नहीं हो रहा है। पहले समाज में संयुक्त परिवारों की प्रथा थी। लेकिन आज अणु परिवारों की प्रथा है। यह परिवर्तन वृद्धजनों की देखभाल और छोटे बच्चों की देखभाल में बड़ा बाधा उत्पन्न कर रहा है। पुल बनी थी माँ नामक कविता पाठकों का मन इस समस्या की ओर आकर्षित करनेवाली एक कविता है।

26. पोस्टर - संदेश (Points) - वृद्धजनों का संरक्षण

1. बुढ़ापा अभिशाप नहीं ...
वृद्धजनों को आदर और संरक्षण प्रदान करो।

3. बूढ़े-बुजुर्ग अनुभवी लोग हैं ...
कुछ पल बैठो उनके पास
हर चीज़ गूगल पर नहीं मिलती।

4. बूढ़े माँ-बाप को वृद्ध सदन में मत छोड़ो ...
उनकी देखभाल अपने बच्चों का ही दायित्व।

2. वृद्ध लोगों को हमारे साथ रहने दें ...
हाथ पकड़कर उनको भी आगे बढ़ाइए।

5. बूढ़े माँ-बाप को अकेले कहीं छोड़नेवाले याद रखें ...
भविष्य में उन्हें भी यही हालत होगी।

विश्व वृद्ध दिवस - अक्टूबर 1

27. पोस्टर - संदेश (Points) - मातृ संरक्षण

1. जिस घर में माँ होती है ...
वहाँ सब कुछ सही रहता है।

3. बचपन में हमारी पुल बनी माँ की
बुढ़ापे में बने हम उनकी लाठी।

5. बूढ़ी माँ को अकेले कहीं छोड़नेवाले याद रखें
भविष्य में उनको भी यही हालत होगी।

2. जितना प्यार-दुलार माँ ने हमें दी,
उसी मन से उनका देखभाल करना बच्चों का दायित्व।

4. माँ भले ही पढ़ी-लिखी हो या न हो
पर संसार का कई दुर्लभ ज्ञान हमें उनसे प्राप्त होता है।

6. मत गुस्सा करना अपनी माँ से यारो
वो माँ की दुआ तुम्हें हर मुसीबत से बचाती है।

विश्व मातृ दिवस - मई 10